कृषि विश्वविद्यालय की कहानी : किसानों की जुबानी

पश्चिमी उत्तर प्रदेश कृषि के क्षेत्र में विकास की ओर अग्रसर

सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
मेरठ - 250 110

सिरका उत्पादन को बनाया अतिरिक्त आय का स्रोत

मैं नरेश सिरोही पुत्र श्री महावीर सिंह गॉव व पोस्ट– झिटकरी तहसील सरधना जनपद मेरठ का एक कृषि स्नातक लघु किसान हूँ, मेरे पास मात्र 1.5 एकड भूमि है जिसमें मैं अपने पूर्वजों के अनुसार गन्ने की खेती को ही अपनी जीविका का माध्यम मानकर अपने परिवार की मूलभूत आवश्यकता और अपने अस्तित्व को बनाये रखने हेतु संघर्ष करता रहा हूँ, लेकिन आर्थिक स्थिति एवं संसाधनों के अभाव के कारण कुछ हासिल करने में असमर्थ रहा हूँ। सन् 2014 में मैंने जनपद, मेरठ के कृषि विज्ञान केन्द्र, हस्तिनापुर में सम्पर्क में किया। मेरी आर्थिक स्थिति एवं संसाधनों को ध्यान में रखते हुये मेरे खेत पर उत्पादित गन्ने से सिरका बनाने की सलाह दी गयी तत्पश्चात मेरी रूचि को देखते हुये मुझे गन्ने से सिरका बनाने का प्रशिक्षण कृषि विज्ञान केन्द्र, हस्तिनापुर द्वारा दिया गया एवं दूसरे प्रशिक्षण के लिये मुझे पं0 दीन दयाल उपाध्याय, राजकीय ग्रामीण विकास संस्थान, लखनऊ भेजा गया । इसके पश्चात् मैने अपने सामर्थ्य के अनुसार संसाधनों का सदुपयोग करते हुए एकाग्रचित होकर निरंतर सिरका तैयार करने से लेकर इसकी बिक्री तक समस्त जानकारी जुटायी। मैने घरेलू स्तर पर गन्ने से सिरका बनाने का कार्य वर्ष 2015 में 1.60 कुन्तल गन्ने से शुरू किया।

वर्तमान में मैं गन्ना सहित सेव, जामुन, अनार, अनन्नास, अॅगूर, आँवला, खजूर, बेल पत्थर आदि सहित लगभग 18 प्रकार के सिरके तैयार कर रहा हूँ। वर्तमान में 15 से 18 टन सिरका तैयार कर अपने ब्रान्ड “Vigour of Village” के नाम से एक व आधा लीटर की पैकिंग में शहर के प्रमुख किराना स्टोर, आयुर्वेदिक स्टोर, भोजनालयों सहित लगभग 40 जगहों पर आपूर्ति कर रहा हूँ। जिससे रू0 750000.00 वार्षिक आमदनी हो रही है। यह उद्यम “Village food Product ” के नाम से *fssai* द्वारा पंजीकृत है व जी0एस0टी0 नं0 भी लिया हुआ है। मुझे माननीय, कृषि मंत्री भारत सरकार, माननीय कृषि मंत्री, उत्तर प्रदेश एवं उप महानिदेशक प्रसार, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा विभिन्न अवसरों पर नवाचारी कृषक के रूप में सम्मानित किया जा चुका है।

पुष्प उत्पादन एक सफलता का रास्ता

मैं रतन सिंह पुत्र श्री राम सिंह निवासी पीपलीखेड़ा विकास खण्ड–खरखौदा जनपद मेरठ का निवासी हूँ। मेरे पास अपनी कुल 0.8 एकड़ पारिवारिक भूमि है। जिसमें मैं परम्परागत रूप से गेहूँ एवं धान की खेती करता था। इस खेती से कम आमदनी होने के कारण पारिवारिक जीविका चलाना कठिन हो रहा था। इसके बाद मैंने छोटे क्षेत्रफल में अपनी जानकारी के अनुसार फूलों की खेती प्रारम्भ की लेकिन शुरूआत में इस कार्य में वांछित सफलता प्राप्त नहीं हुयी, लेकिन मैं निराश नहीं हुआ और इसी दौरान मेरा सम्पर्क कृषि विज्ञान केन्द्र, हस्तिनापुर के वैज्ञानिकों से हुआ। केन्द्र के वैज्ञानिकों ने मुझे फूलों की नई किस्मों एवं उत्पादन तकनीकी के बारे में विस्तार से बताया जिसके अनुसार मैंने अपनी चार बीघा जमीन में वैज्ञानिक तकनीक अपनाते हुये गेंदा के फूलों की खेती प्रारम्भ की। शुरूआत में मुझे स्थानीय स्तर पर फूलों को बेचकर आकर्षक आय प्राप्त हुई। जिसमें मैने गेंदा के साथ साथ रजनीगंधा, गुलदावदी एवं ग्लेडियोलस की भी खेती प्रारम्भ की।

फूलों की बाजार में अधिक मांग होने से पिछले चार वर्षों से मैंने गुलदावदी की जैमिला प्रजाति को अपनाया हुआ है। मुझे केवल गुलदाउदी से रूपया 165000 प्रति एकड़ की आमदनी हो रही है एवं पूरे वर्ष में फूलों की दो फसल लेने से रू0 280000 प्रति एकड आय प्राप्त हो रही हैं। मैं अपनी फूलों की आपूर्ति दिल्ली के बाजार में करता हूँ फूलों की अधिकता के समय मैं शादी के मंडपों में सीधे आपूर्ति करता हूँ जिससे मुझे दैनिक आधार पर नकदी प्राप्त होती रहती है व लाभ भी अधिक होता है। इस कार्य में अपने सहयोग के लिये लगभग महिलाओं को वर्ष भर रोजगार उपलब्ध कराता हूँ। मैं उन्नतशील कृषक के रूप में कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा सम्मानित भी किया जा चुका हूँ।

दलहनी फसल की खेती बना आय का स्रोत

मैं सुरेन्द्र यादव पुत्र श्री राम किशन बागपत जनपद का एक प्रगति ील किसान हूँ। मेरा गांव बुडसनी जनपद के विकास खण्ड पिलाना के अन्तर्गत आता हैं। मैं सुरेन्द्र यादव परम्परागत रूप से जनपद में प्रचलित गन्ना पेडी, गेहूँ कृषि प्रणाली को अपनाता रहा हूँ। वर्ष 2014 में मैं एक कृषक गोष्ठी के माध्यम से कृषि विज्ञान केन्द्र के सम्पर्क में आया और मैंने परम्परागत कृषि में बदलाव की इच्छा केन्द्र के वैज्ञानिको से प्रकट की तांकी मेरी खेती से आय बढ सके। केन्द्र द्वारा मेरी जिज्ञासा को ध्यान में रखते हुए मुझे सुझाव दिया गया कि वह समन्वित कृषि प्रणाली को अपनाएें एवं अपने फसल चक्र में दलहनी फसलों का समावे ा करें। मैने सुझाव को मानते हुए फसलोत्पादन के साथ–साथ प ुपालन/दुग्ध उत्पादन का कार्य भी आरम्भ किया तथा साथ ही दलहनी फसलों को अपने परम्परागत फसल चक्र में भाामिल करना आरम्भ किया व गन्ने के साथ उर्द व मूंग की अन्तः फसली खेती प्रारम्भ की। इसी बीच कृषि विज्ञान केन्द्र को राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मि ान कार्यक्रम मिला जिसके अन्तर्गत रबी 2015–16 में जनपद में 16 है0 क्षेत्रफल में मसूर के प्रक्षेत्र प्रद िन आयोजित करने थे। इस क्रम में मैंने केन्द्र के वैज्ञानिकों से एक है0 क्षेत्रफल में मसूर के प्रद िन आयोजित करने की इच्छा जताई व केन्द्र से सम्बन्धित इनपुट जैसे बीज (एल–4549), बीज उपचार हेतु राइजोबियम कल्चर मृदा उपचार हेतु ट्राइकोडर्मा तथा खरपतवार नियन्त्रण हेतु जमाव पूर्व खरपतवारना ी पेन्डामैथलिन प्राप्त कर उसके प्रयोग के साथ प्रद िनों का आयोजन किया। केन्द्र के वैज्ञानिकों की निरन्तर देखरेख में प्रद िन सफलतापूर्वक पूरे हुए व 4.8 कु0 उपज प्राप्त की। ऐसे क्षेत्र में यह एक आ चर्यजनक सफलता थी जहाँ पर कि कृषक नील गाय व अन्य जंगली जानवरो क प्रकोप की वजह से दो द ाक पहले दलहनी फसलो की खेती छोड़ चुके थे। उसके बाद से निरन्तर अपने फसल चक्र में नियमित रूप से दलहनी फसलो की खेती की। मुझसे प्रेरित होकर अन्य कृषक भी दलहनी फसलों की खेती की तरफ प्रेरित हो रहे हैं।

पोषण वाटिका द्वारा सन्तुलित आहार के नये आयाम

मैं श्रीमती गुंजन पत्नी श्री आदेश ग्राम सांकरौद जनपद बागपत के विकासखंड खेकड़ा, की महिला कृषक हूँ। विगत वर्षों में मैं अपने दैनिक जीवन में खान पान हेतु बेल वाली सब्जियां जैसे लोंकी , तोरई , कदद् इत्यादि को उगा रही हूँ। परन्तु कुछ अन्य सब्जियों (गोभी , भिंडी) को बाजार से खरीदती थी। वर्ष 2015 में मैं कृषि विज्ञान केन्द्र बागपत के संपर्क में आयी। जिसके पश्चात भोजन में फल –सब्जियों की महत्ता एवं अच्छे स्वास्थ्य हेतु इनकी भूमिका तथा भोजन में इनकी कमी होने से होने वाले रोगों की जानकारी का कृषि विज्ञानं केंद्र से प्रशिक्षण प्राप्त किया। जिसके बाद मुझे यह जानकारी प्राप्त हुई कि बीमारी से बचने एवं अच्छे स्वास्थ्य के लिए पोषण वाटिका एक अच्छा एवं टिकाऊ उपाय है। मैंने अपने घर के आस–पास की जमीन में पोषण वाटिका उगाना प्रारम्भ किया। जिसमें रबी , खरीफ ,जायद तीनों मौसम में उगाई जाने वाली सब्जियों के फसल चक्र को अपनाकर तथा उगाकर वर्ष भर फल एवं सब्जियाँ प्राप्त कर रही हूँ। पोषण वाटिका में 128 दिन (85 किलोग्राम) वर्तमान में रबी खरीफ जायद में लगभग 315 दिन (450 किलोग्राम) सब्जियाँ प्राप्त कर रही हूँ। मेरे द्वारा पोषण वाटिका में उगाई गई

सब्जियों से अप्रत्यक्ष रूप में होने वाले खर्च में बचत हुई है। इसके अतिरिक्त सभी मौसम (रबी , खरीफ , जायद की) सब्जियों (टमाटर, शलजम, गोभी पालक मेथी , मूली गाजर , चुकंदर बैंगन भिंडी, बीन्स, कददू , लौकी, तोरई, धनियाँ इत्यादि) तथा फल (पपीता , अमरुद) को आहार में शामिल करने से मौसमी बीमारियों (बुखार जुखाम) का प्रभाव कम हो जाता है।

फर्ब्स विधि से मल्चिंग और ड्रिप सिंचाई के साथ शिमला मिर्च की खेती

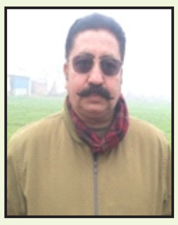

मैं तारा सिंह पुत्र श्री सोहन सिंह, गॉव बहादुरपुर दिउरिया, ब्लॉक – खुटार, तहसील–पुंवायां, जनपद–शाहजहॉपुर का लघु किसान हूँ। मेरे पास 0.8 है0 भूमि है मैं परम्परागत तरीके से शिमला मिर्च की खेती कर रहा था जिसमें उत्पादन लागत अधिक व कीटरोग की समस्या रहती थी। जिससे मात्र 1.40 लाख का भुद्व लाभ ही मिल पाता था। जब से मैं कृषि विज्ञान केन्द्र शाहजहॉपुर के सम्पर्क में आया और वैज्ञानिकों के साथ खेती की नई तकनीकियों के बारे में बातचीत की तब केन्द्र के वैज्ञानिकों ने शिमला मिर्च उत्पादन की आधुनिक तकनीकी के बारे में प्रशिक्षण दिया ओर प्रदर्शन भी कराये, जिससे मुझको अधिक आर्थिक लाभ हुआ। पिछले वर्ष (2019–20) में 1.75 है0 शिमला मिर्च की खेती की थी जिसमें कृषक पद्वति की तुलना में लगभग रु0 2.25 प्रतिशत भुद्वलाभ मिला था। विगत वर्ष में शिमला मिर्च की खेती से मिले लाभ से उत्साहित होकर मैं वर्तमान में कुल 11.50 हे0 क्षेत्रफल भूमि में शिमला मिर्च की खेती कर रहा हूँ। तथा ड्रिप सिंचाई का उपयोग करने से भूजल का कुशल उपयोग हुआ एवं उत्पादन लागत में कमी आयी तथा इससे कीट और बीमारियों एवं खरपतवारों की समस्याओं में भी कमी आई।

एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन एवं एकीकृत नाशी जीव प्रबंधन द्वारा बढाई आय

मैं शीरीष कुमार सक्सेना पुत्र श्री अविनाश चन्द्र सक्सेना, ग्राम–कुतुवापुर, ब्लॉक–भावलखेडा, तहसील–सदर, जनपद–शाहजहॉपुर का निवासी हूँ। मेरे पास 1.0 है0 क्षेत्रफल भूमि है जिसमें मैं परम्परागत रीके से मसूर की पुरानी प्रजातियों के साथ खेती कर रहा था। तथा मेरे द्वारा मसूर की 21.30 क्विंटल प्रति हैं0 उपज प्राप्त की एवं रू0 61170.00 प्रति है0 भुद्वलाभ प्राप्त हुआ था। जब से मैं कृषि विज्ञान केन्द्र शाहजहॉपुर के वैज्ञानिकों के सम्पर्क में आया और वैज्ञानिकों के साथ दलहनी फसलों की खेती की नई तकनीकियो के बारे में बातचीत की कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों ने मसूर पर उनके प्रक्षेत्र पर प्रदर्शन लगाये तथा उच्च उत्पादन की आधुनिक तकनीकी के बारे में प्रशिक्षण दिया। वर्तमान में 2. 5 हैं0 क्षेत्रफल में मसूर की खेती कर रहा हूँ तथा वर्ष 2019–20 में 25.5 क्विंटल प्रति है0 मसूर की उपज प्रात हुई एवं रू0 83050 प्रति है0 भुद्व लाभ प्राप्त हुआ। उच्च उत्पादक प्रजाति, एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन एवं एकीकृत नाशी जीव प्रबंधन का प्रयोग किया गया। छिटकवां विधि के सापेक्ष पंक्तियों में बीज बोया गया जिससे अन्तः सस्य क्रियाऐं आसानी से की जा सकी तथा रोग एवं खरपतवार की समस्याओं में कमी आयी। यह तकनीक मसूर के उत्पादन और उत्पादकता को बढ़ाने में काफी कारगर है। परम्परागत खेती की तुलना में इस विधि से मसूर उत्पादन के शुद्ध लाभ में लगभग 70 प्रतिशत की वृद्धि हुई ।

वर्मी कम्पोस्ट एवं जैविक खेती उत्पादन ने खोला आय का स्रोत

मैं सैयद कुनैन, ग्राम–धम्मन, पो0–दढ़ियाल, जनपद–रामपुर का कृषक हूँ। कृषि विज्ञान केन्द्र, रामपुर के तकनीकी सहयोग से वर्मी कम्पोस्ट एवं जैविक खेती उत्पादन का कार्य वर्ष 2016 से प्रारम्भ किया साथ ही गांव के अन्य किसानों को इस तकनीकी से लाभान्वित कराया जिसमे इस तकनीकी से मुझे वर्ष में 5 से 6 लाख रूपये की आमदनी हो रही है।

शहद व्यवसाय- आय का बेहतर स्रोत

मैं, अंबुज बालियान, ग्राम मांडी, ब्लाक बघरा, जनपद मुजफ्फरनगर का ग्रामीण युवा हूँ मैं परम्परागत गन्ने की खेती को छोडकर मधुमक्खी पालन का व्यवसाय गाँव के स्तर पर 10 मधुमक्खी के बक्सों से शुरू किया और वर्तमान में 1000 मधुमक्खी पालकों का फार्मर प्रोड्यूसर आर्गेनाईजेशन एवं यू0पी0 हनी फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी का गठन किया हुआ है। बाजार में यू0पी0 हनी के नाम से शहद की बिक्री की जा रही है और वर्तमान में लगभग 500 कुन्तल शहद की सालाना बिक्री हो रही है। मुझे देखकर जनपद के युवाओं का रूझान शहद व्यवसाय की तरफ बढ़ रहा है जिससे युवाओं का शहर की तरफ पलायन रोकने में मदद मिल रही है।

फार्म यंत्रीकरण से आय में बढ़ोत्तरी

मैं, अरविन्द मलिक निवासी ग्राम बधाईकलां, ब्लाक चरथावल, मुजफ्फरनगर पिछले 30 वर्षों से गन्ने की खेती में लगा हुआ हूँ। जनपद में अग्रणी गन्ना किसान के नाम से पहचाना जाता हूँ और कई बार राज्य सरकार से सम्मानित हो चुका हूँ। मैंने गन्ने की खेती को पूर्णतः यंत्रीकरण के माध्यम से करना शुरू कर दिया है एवं गाँव स्तर पर 'कस्टम हायरिंग सेंटर' का संचालन कर अन्य कृषकों को भी यंत्रीकरण के लिए प्रेरित कर रहा हूँ। 2022 तक कृषकों की आय दोगुनी करने के लिए गन्ने के साथ सहफसली के रूप में सरसों, चना, मसूर, उर्द/मूँग का भी सफल उत्पादन मेरे द्वारा किया जा रहा है।

गन्ने की ट्रेंच विधि से बेहतर उत्पादन

मैं, ओमकार त्यागी ग्राम बडकली, ब्लाक चरथावल, जनपद मुजफ्फरनगर एक युवा गन्ना उत्पादक किसान हूँ परम्परागत तकनीक से गन्ने का उत्पादन 600–700 कुन्तल प्रति है0 प्राप्त होता था एवं लागत अधिक आती थी। मैंने ट्रेंच विधि से गन्ना लगाकर 1000–1100 कुन्तल प्रति है0 की उत्पादकता प्राप्त की एवं सिंचाई जल की 35–40% की बचत की। मेरे अपने गाँव एवं आस–पास के 15–20 गाँवों के किसानों ने प्रेरित होकर ट्रेंच विधि से गन्ने की खेती करके अपनी आय में बढ़ोत्तरी प्राप्त करने के साथ–साथ जल संरक्षण का भी कार्य किया है। मुझे राष्ट्रीय स्तर पर इस कार्य के लिए आई0सी0ए0आर0 एवं धानुका एग्रीटेक द्वारा सम्मानित भी किया गया है।

खीरा : आय का बेहतर माध्यम

मैं, मनोज त्यागी ग्राम रोहना कलां, ब्लाक चरथावल जनपद मुजफ्फरनगर का कृषक हूँ। जिसने खीरे की खेती से मात्र 90 दिन में प्रति हैक्टेयर 1,50,000 से 1,80,000 रूपये की आय अर्जित की, जिसे देखकर गाँव के 60–65 कृषक खीरे की खेती कर रहे हैं नये क्षेत्र के 20 ग्रामों में खीरे की खेती की जा रही है जो कम समय में अच्छा मुनाफा दे रही है। मैं खीरे के साथ–साथ अन्य फसलों धान, गेहूँ, गन्ने की उन्नत खेती कर रहा हूँ जिसके लिए मुझे राष्ट्रीय स्तर पर कई सम्मानों जैसे जगजीवनराम सर्वश्रेष्ठ कृषक अवार्ड (ICAR) VIBRANT GUJRAT 2013 एवं इफ्को द्वारा सम्मानित किया गया है।

स्वरोजगार से सशक्तिकरण

मैं, श्रीमती प्रतिभा पुत्री श्री रोशनलाल ग्राम सैदपुरा, जिला मुजफ्फरनगर की निवासी हूँ मैंने स्नातकोत्तर तक शिक्षा प्राप्त की किन्तु पारिवारिक परिस्थितियाँ प्रतिकूल होने के कारण मैंने स्वयं को एवं मेरे जैसी अनेक लाचार, अबला स्त्रियों को सामाजिक एवं आर्थिक संबल देने के लिए 12 महिलाओं का स्वयं सहायता समूह का गठन किया। प्रतिमाह 200 रूपये की छोटी बचत से शुरूआत की तब जाकर कुछ पैसा जमा हुआ। इस बीच खादी ग्रामोद्योग से प्रशिक्षण प्राप्त करके धूंपबत्ती, अगरबत्ती, डिटरजेन्ट पाउडर एवं नहाने की साबुन बनाने का काम घरेलू स्तर पर शुरू किया। धीरे–धीरे जमा पूँजी बढ़ने पर उत्पादन बढ़ाया व गाँव से आसपास के कस्बों तक के बाजार में उत्पादन को पहुँचाया। कृषि विज्ञान केन्द्र पर आयोजित होने वाले किसान मेलों में भी अपनी स्टॉल लगाकर अपने सामान की बिक्री की। वर्तमान में मेरा समूह रूपये 25,000 से 30,000 का शुद्ध लाभ प्रतिमाह कमा रहा है। हमारे समूह की समृद्धि देखकर गाँव की एवं आसपास की अनेकों महिलाएं भी स्वरोजगार हेतु हमारे साथ जुड़ गई हैं।

स्वयं सहायता समूह के माध्यम से डेयरी व्यवसाय

मैं श्रीमती ममता पत्नी श्री प्रदीप कुमार निवासी ग्राम हैदरनगर जिला मुजफ्फरनगर की निवासी हूँ। मैंने दसवीं तक शिक्षा प्राप्त की है। मैं मात्र एक गृहणी थी किन्तु ग्रामीण पिछड़े व कमजोर वर्ग की महिलाओं के लिये काम करने की इच्छा के चलते मैंने अपने आसपास की 16 महिलाओं को जोड़कर एक स्वयं सहायता समूह बनाया जिसमें थोडी–थोडी बचत करके हमने अपने समूह में अच्छी खासी रकम जमा कर ली। उस पैसे का उपयोग हम महिलायें आवश्यकता पडने पर समूह से एक निश्चित ब्याज दर पर पैसा लेकर अपनी आय बढ़ाने के लिये प्रयास कर रही हैं। मैंने स्वयं भी 2 भैंस अतिरिक्त खरीदकर दूध को गाँव में ही स्थित डेयरी पर भेजकर प्रतिदिन औसतन 800 रूपये की आय प्राप्त कर रही हूँ। जिसमें से शुद्ध लाभ लगभग 500 रूपये प्रतिदिन की दर से 15,000 रूपये मासिक आय प्राप्त हो रही हैं।

डेरी फार्मिंग से स्वरोजगार

मैं, योगेन्द्र सिंह, पुत्र श्री रामवीर सिंह, निवासी ग्राम नरोत्तमपुर माजरा, पोस्ट एवं विकास खण्ड बघरा, जिला मुजफ्फरनगर का स्थायी निवासी हूँ। मैंने उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद से हाईस्कूल पास करने के बाद पारम्परिक कृषि (गन्ना उत्पादन) को अपनाया था। कुछ वर्षों उपरान्त कृषि विज्ञान केन्द्र, बघरा के संपर्क में आया वहाँ पर 6 दिवसीय डेरी फार्मिंग प्रशिक्षण प्राप्त कर संकर नस्ल की 3 गायों से डेरी का कार्य (दूध उत्पादन) शुरू किया। वर्तमान में मेरे पास संकर नस्ल की 28 गाय एक साँड तथा 19 बच्चे हैं। गन्ना उत्पादन पूरी तरह छोड़ दिया है। मेरे पास ननौता सहारनपुर की मधुसूदन डेरी का दूध संग्रह केन्द्र है। मैं प्रतिदिन वसा के आधार पर 375 लीटर दूध की आपूर्ति करता हूँ। गाँव के 5 परिवार का दूध भी लेता हूँ। श्रमिक तथा मेरा परिवार मिलकर डेरी कार्य में व्यस्त रहते हैं मुझे प्रति वर्ष 5 लाख रूपये डेरी फार्मिंग से बच जाते हैं। मैं जनपद स्तर से डेरी फार्मिंग में सम्मानित हो चुका हूँ।

ब्रायलर उत्पादन आय का उत्तम साधन

मैं सचिन कुमार सिंह, ग्राम–भौनकपुर, पो0–करमचा, जनपद–रामपुर का कृषक हूँ। मैं अपने पिताजी के साथ पारंपरिक तरीके से खेती एवं ब्रायलर उत्पादन का कार्य करता था। जिससे हमें अपेक्षित लाभ प्राप्त नही होता था। वर्ष 2008 में कृषि विज्ञान केन्द्र, रामपुर के सम्पर्क में आने के बाद खेती के साथ ब्रायलर उत्पादन वैज्ञानिक तरीके से किया जिससे हमें अपेक्षित लाभ से अधिक आय प्राप्त हुआ। अब मैं ब्रायलर उत्पादन के साथ मधुमक्खी पालन का कार्य केन्द्र के सहयोग से कर रहा हूँ जिससे मुझे प्रति वर्ष में लगभग 9 लाख रूपये लाभ प्राप्त हो रहा है।

कृषि मशीनरी द्वारा मल्चिंग करके मृदा का उच्च स्वास्थ्य

मैं ि ाव कुमार पुत्र श्री द ानी सिंह निवासी ग्राम –खुरसैदपुरा माजरा व पोस्ट – जारचा, परगना व तहसील/ब्लॉक –दादरी, जनपद– गौतमबुद्धनगर, उ0प्र0 का एक कृषक हूँ। मेरे पास स्वयं का दस एकड़ कृषि योग्य भूमि है तथा 6 एकड़ भूमि किराये पर लेकर कुल 16 एकड़ भूमि पर गन्ना, धान, गेहूँ, सरसों, दलहन, बागवानी और हल्दी के साथ–साथ मसाले, सब्जियों की खेती विगत 28 वर्षों से कर रहा हूँ। मेरे द्वारा जैविक खेती एवं मृदा स्वास्थ्य हेतु जल बचाव के विभिन्न कार्य किये जा रहे है। मैं वर्ष 2015 से कृषि विज्ञान केन्द्र, गौतमबुद्ध नगर के सम्पर्क में आने के प चात जैविक कार्य एवं मृदा स्वास्थ्य हेतु गन्ना, धान, सरसों एवं अन्य फसलों के अव ोशो को न जलाकर कृषि म ीनरी द्वारा मलचिंग करके मृदा में मिलाने का कार्य कर वेस्ट डीकम्पोजर की सहायता से फसल अवशेषों को गलाने का कार्य एवं वर्मी कम्पोस्ट व कम्पोस्ट के साथ–साथ वेस्ट डीकम्पोजर की सहायता से विभिन्न प्रकार के उत्पाद तैयार करके जैविक कृषि उत्पादन के क्षेत्र में जैविक बासमती धान, गेहूँ, सरसों, उड़द, मूँग, चना, मसूर, अरहर एवं सब्जियों का जैविक उत्पादन कर रहा हूँ तथा सामान्य उत्पादन से अतिरिक्त लाभ कमा रहा हूँ। भविष्य मे जैविक उत्पाद प्रसंस्करण इकाई लगाकर उद्योग के रुप में स्थापित करना चाहता हूँ। जिससे स्वयं की आय वृद्धि के साथ–साथ ग्रामीण युवको को रोजगार दे रहा हूँ।

मौन पालन से परम्परागत खेती से अधिक आय

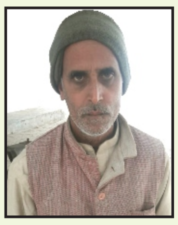

मैं श्री राजपाल सिंह, मेरा मुख्य व्यवसाय कृषि है तथा मैं काफी लम्बे समय से कृषि करता आ रहा हूँ। मेरी मुख्य फसलें धान, गेहूँ, सरसों, उर्द व मेन्था है । परन्तु इन फसलों की खेती करने से मुझको काफी मेहनत करने के बाद भी आपेक्षित लाभ नही मिल पाता था । अतः मेरे मन में विचार आया कि, खेती के साथ–साथ खेती से ही जुडा हुआ कोई अन्य व्यवसाय किया जायें। अन्य व्यवसाय करने की बात सोचकर इन्होने कृषि विज्ञान केन्द्र से सम्पर्क किया । केन्द्र के कृषि वैज्ञानिकों से विचार विमर्श किया तो वैज्ञानिकों ने मधुमक्खी पालन करने की सलाह दी । तो मैंने 2009 में 5 बॉक्स से शुरूआत की परन्तु इन्हे आपेक्षित लाभ नही मिल सका तब इन्होंने डा0 अरविन्द कुमार, वैज्ञानिक पादप सुरक्षा से वार्ता की । डा0 अरविन्द कुमार ने बताया कि हम रोजगार परक प्रशिक्षण के अन्तर्गत एक सप्ताह का मधुमक्खी पालन का प्रशिक्षण देते है। अतः श्री राजपाल सिंह ने वर्ष 2012 में प्रशिक्षण प्राप्त कर मधुमक्खी पालन का कार्य शुरू किया। कार्य प्रारम्भ करने के उपरान्त बहुत सी समस्याये इनके सामने आयी जैसे–मधुमक्खियों की बीमारी, मधुमक्खी की अच्छी प्रजाति का न मिलना, कृत्रिम भोजन को समय पर न देना, माईग्रेशन न कराना, सफाई पर विशेष ध्यान न देना आदि, परन्तु ये समय–समय पर केन्द्र पर कार्यरत डा0 अरविन्द कुमार से वार्ता कर मधुमक्खी पालन से सम्बन्धित समस्याओं का समाधान करते रहे । केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा समय – समय पर ईकाई का भ्रमण किया गया । वर्ष 2015–16 में इनके पास कुल 150 बाक्स थे जिनसे 52.50 कु0 शहद तथा 37.5 किलो0 मोम उत्पादित होता था जिसका मूल्य रू0 536250.00 तथा शुद्ध आय रू0 311250.00 प्राप्त हुई। जो वर्ष 2016–17 में बढकर 200 बॉक्स हो गये तथा अच्छी गुणवत्तायुक्त शहद का उत्पादन कर रहा हूँ। इनका शहद उत्पादन 65.0 कु0, मोम 120 किलो0 तथा पराग उत्पादन 120 किग्रा0 हुआ जिसका मुल्य रू0 866000.00 तथा शुद्वआय रू0 441000.00 प्राप्त हुई।

vk; e of} & इस प्रकार वर्ष 2016–17 में खेती से आय रू0 176320.00 तथा खेती के साथ सह व्यवसाय के रूप में मधुमक्खी पालन से रू0 441000.00 प्राप्त हुये। इस प्रकार कुल शुद्वआय एक वर्ष में रू0 617320.00 प्राप्त हुई।

i:lkj & इनके मधुमक्खी पालन के कार्य को देखकर गॉव के चार कृषक तथा आस–पास के ग्रामों में भी मधुमक्खी पालन का कार्य चल रहा है । इस प्रकार खेती के साथ–साथ उक्त सह व्यवसाय को अपनाने के लिये मेरे द्वारा भी तथा कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा भी प्रेरित किया जाता है। मेरी तरह अन्य कृषक भाईयों की आय में बढोत्तरी हो रही है।

i:'kfLr i= & मेरे कार्य को देखते हुये कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा वर्ष 2016 में

नर्सरी एवं बागवानी से अधिक आय

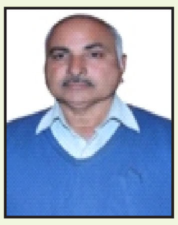

मैं जगत सिंह, ग्राम–लोहरा, पो0–स्वार, जनपद–रामपुर का कृषक हूँ। मैं पारंपरिक तरीके से खेती का कार्य करता था। जिससे हमें अपेक्षित लाभ प्राप्त नही होता था। कृषि विज्ञान केन्द्र, रामपुर के सम्पर्क में आने के बाद खेती के साथ फलों एवं केला की नर्सरी तथा अमरूद के बाग लागाकर प्रतिवर्ष लगभग 3 लाख रूपये शुद्ध लाभ प्राप्त कर रहा हूँ।

सह-फसली खेती से कैसे लें अधिकतम लाभ

मैं गुरूवचन पुत्र श्री खेमचन्द सिंह निवासी ग्राम गुलरिया विकास खण्ड–जोया, जनपद अमरोहा का निवासी हूँ मैं अपने खेत पर धान, गेहूँ, गन्ना की खेती करता था, लेकिन उससे मुझे अधिक लाभ प्राप्त नहीं हो रहा था। वर्ष भर में मुझे धान, गेहूँ, गन्ना से लगभग रु 1.30–1.60 लाख रुपये प्रति हे0 की भाुद्ध आय होती थी। मैंने कृषि विज्ञान केन्द्र, अमरोहा के वैज्ञानिको से सम्पर्क किया और अपनी स्थिति से वैज्ञानिकों को अवगत कराया उन्होने मुझे भारद कालीन गन्ने के साथ सरसो व सब्जियों की खेती करने के लिये प्रोत्साहित किया। मैने उनको बताया मेरे पास मात्र 04 एकड जमीन है उस पर मुझे गन्ने के साथ सह फसली खेती करने की सलाह दी। एक एकड क्षेत्रफल में भारद कालीन गन्ने की बुआई ट्रेन्च विधि से 1.0 मीटर की दूरी पर की। तथा उसमें एक एकड़ क्षेत्रफल पर सरसो की नवीनतम प्रजाति को लगाया तथा एक एकड़ क्षेत्रफल में गन्ने के साथ आलू तथा 01 एकड क्षेत्रफल में गन्ने के साथ फूलगोभी की रोपाई की जिसमें आलू एवं फूलगोभी की गन्ना की दो लाईनों के बीच में दो–दो लाईनें ली गयी।

जब मैं केवल एकल गन्ना की खेती करता था तो मुझे पूर्व के वर्षों में लगभग रूपयें 01 लाख से 1.5 लाख तक प्रति हे0 की भाुद्ध आय प्राप्त होती थी। लेकिन जब से मैने वैज्ञानिकों से तकनीकी सलाह लेकर भारद कालीन गन्ने के साथ सहफसली (गन्ना + सरसो, गन्ना + आलू, गन्ना + फूलगोभी) की खेती भाुरु की है तबसे मुझे क्रम ा: 304875, 417825, एवं 374385 रुपये की भाुद्ध आय प्राप्त हुई है जो लगभग दोगुनी है मैने इस वर्ष से अपनी खेती को जैविक विधि से करना भाुरु कर दिया है जिसका मुझें आने वाले समय में अधिक लाभ मिलेगा। मेरे इस प्रकार से खेती करने को गांव के तथा आसपास के कृषकों ने भी भाुरु किया है।

देशी गाय का दूध उत्पादन उच्च आय का स्रोत

मैं ओमवीर सिंह पुत्र श्री मं ाा राम निवासी ग्राम – बम्बावड़, तहसील–दादरी, जिला – गौतमबुद्धनगर का एक किसान हूँ। केवीके के सम्पर्क में आने से पूर्व छोटे स्तर पर दुग्ध उत्पादन का कार्य करता था। वैज्ञानिको की सलाह पर वैज्ञानिक तरीके से वर्ष 2016 में डेयरी स्थापित की वर्तमान में 80 गाये (गिर, एच.एफ. एवं साहीवाल नस्ल) है। दूध का विपणन सीधे किया जाता है जिससे मेरी आय में लगभग 75 प्रति ात की वृद्धि हुई है। इसके अलावा 6 एकड़ कृषि भूमि एवं 5 एकड़ किराये की भूमि पर धान, गेहूँ एवं सब्जियों की खेती विगत 18 वर्षों से कर रहा हूँ। मैं मुख्य रुप से खरीफ के मौसम में बासमती धान प्रजाति 1121, 1509 एवं 1718 की तकनीकी खेती करता हूँ। मैं विगत कुछ वर्षों से NCIPM, पूसा, केवीके गौतमबुद्ध नगर एवं बासमती निर्यात विकास प्रतिशठान से प्रि क्षण लेकर उन्नत किस्म की बासमती एवं धान बीज उत्पादन का कार्य कर रहा हूँ। रोग एवं कीटों का नियंत्रण आई.पी.एम. तकनीक द्वारा करके उत्पादन भी अधिक एवं मूल्य भी अधिक मिल रहा है।

शिमला मिर्च की गुणवत्तायुक्त पौध : उत्पादन हेतु सस्ती एवं सुलभ संरचना

भारत एक कृषि प्रधान देश है जिसकी अधिकांश जनसंख्या की जीविका कृषि पर निर्भर है। सब्जी उत्पादन में विश्व में हमारे देश का दूसरा स्थान है। विश्व में विशे ाकर भारत एवं चीन में जनसंख्या तेजी से बढी है साथ ही औद्योगिक क्षेत्र में भी काफी विकास हुआ है परिणामस्वरूप कृषि योग्य भूमि दिन प्रतिदिन कम होती जा रही है। साथ ही साथ जलवायु परिवर्तन का भी कृषि उत्पादन कम करने में महत्वपूर्ण योगदान है। उपरोक्त सभी पहलुओं को ध्यान मे रखते हुए विश्व की भूख शांत करने के लिए एक ही रास्ता है कि सभी फसलों (खाद्यान्न, सब्जियों, फलों, मसालों एवं अन्य) की उत्पादकता में वृद्विकी जाए। इसके लिए वैज्ञानिकों द्वारा इजाद की गई अधिक पैदावार वाली प्रजातियों, आधुनिक तकनीकियों, समेकित कीट व्याधि प्रबन्धन का प्रयोग तथा कटाई पश्चात होने वाले नुकसान को कम किया जाए। उपरोक्त के अलावा कृषकों के द्वारा किये गये नवीन परिवर्तन का कृषि पद्धति में समावेश तथा व्यापक प्रचार–प्रसार उत्पादकता बढाने में विशेष कारगर साबित होगा।

जनपद बदायूँ में कृषि विज्ञान केन्द्र की स्थापना 1992 में हुई केन्द्र के सहयोग से जिले में सब्जी उत्पादन कार्यक्रम के तहत शिमला मिर्च उत्पादन वर्ष 1995–1996 में शुरू किया गया शिमला मिर्च की संकर प्रजातियों का उपयोग किया गया। संकर प्रजातियों का बीज अत्यधिक मंहगा होने के कारण पौधशाला की उपयोगिता कृषकों की समझ में आयी और केन्द्र के परामर्श द्वारा उठी हुई क्यारियों में पंक्ति बनाकर बीज की बुआई की जाने लगी। इस क्षेत्र में जुलाई के अन्तिम सप्ताह तथा अगस्त के प्रथम सप्ताह में पौधशाला में बीज की बुआई की जाती है। बरसात का मौसम होने के कारण तेज हवाओं एवं वर्षा से काफी पौध नष्ट हो जाती थी । पॉलीथीन की सुरक्षा कवर तेज हवाओं से फट जाता था।

उपरोक्त समस्या से मुझे आर्येन्द्र कुमार निवासी उझानी निजात पाने के लिए मेरे मन में एक विचार आया कि उर्वरकों के खाली बैगों को एक साथ सिलवाकर पालीथीन कवर की जगह प्रयोग किया जिसके अत्यंत उत्साहजनक परिणाम मिले। बाद में बोरों मे प्रयुक्त हाने वाली 40 x 33 फीट आकार की सीट इस्तेमाल की। जिसकों जगह जगह पर रस्सियों से बांधकर लकडी व बांस की सहायता से टैण्ट नुमा संरचना बनाकर पौधशाला को तेज हवाओं से सुरक्षित किया है तथा साथ ही यह पौधों के ऊपर हल्की छाया भी प्रदान करती है जिससे अधिक तापक्रम से बचाव एवं पौधों की वृद्धि भी तेज होती है।

वर्तमान में जनपद बदायूँ में 500 से अधिक कृ ाक लगभग 1000 हे0 क्षेत्रफल में शिमला मिर्च का उत्पादन कर रहे हैं। ये सभी कृ ाक उपरोक्त संरचना (टैण्ट) बनाकर उठी हुई क्यारियों में सफलतापूर्वक स्वस्थ पौधशाला उगाकर अधिक लाभ ले रहे हैं। उपरोक्त विधि से लगभग 25–30 दिन में पौध तैयार हो जाती है।

उपरोक्त एक टैण्ट की लम्बाई 40 फीट चौडाई 16 फीट तथा ऊँचाई 10 फीट रखते है तथा इसके अन्दर 180–190 ग्राम बीज की बुआई की जाती है इसमें उत्पादित पौध 01 एकड़ क्षेत्र के लिए पर्याप्त होती है।

इस प्रकार शिमला मिर्च की स्वस्थ पौध उगाकर गुणवत्तायुक्त उत्पादन ले रहे हैं। जनपद के कृषक मदर डेरी जैसे संस्थानों से अनुबन्ध कर शिमला मिर्च का उचित मूल्य प्राप्त कर लाभान्वित हो रहे हैं।

दोगुनी आय : शरदकालीन गन्ने में रिले क्रॉपिंग

मैं माजिद अली खान पुत्र श्री बासिद अली ग्राम व पोस्ट–टपराना, जिला–शामली (उत्तर प्रदेश)। मेरे पास 2 हे0 जमीन है। पिछले 2 वर्षों से कृषि विज्ञान केन्द्र, शामली से जुड़े कर अपनी आय में दोगुनी वृद्धि के लिए शरदकालीन गन्ना (सितम्बर माह) में गन्ना, ड्रिप व ट्रेंच (वैज्ञानिक विधि) का उपयोग करके 5 फीट पंक्ति से पंक्ति की दूरी पर लगाया गया जिसमें गन्ना की Co-0238 प्रजाति के एक आँख वाले टुकडे बीज के रूप में प्रयोग किये गये और उसके साथ–साथ एक दर्जन से अधिक अन्य सहफसली ली गई। सब्जियों के अवशेषों से कंपोस्ट बनाकर खाद के रूप में प्रयोग किया। मैंने कृषि विज्ञान केन्द्र, शामली के कृषि वैज्ञानिकों के कुशल तकनीकी र्निदेशन में परम्परागत गन्ने की खेती की तुलना में वैज्ञानिक विधि से 3 गुना अधिक आय प्राप्त की है।

viuk;h x;h u;h rduhd&

1- fjy Økfix& मैंने रिले क्रॉपिंग के तहत 2 एकड भूमि में 12 फसल उगाई। रिले क्रॉपिंग पद्धति में पहले फसल की कटाई से ठीक पहले दूसरी फसल की बुवाई उसी भूमि में की गयी।

2- 'kjndkyhu xUuk] Vsap cokbZ o u;h xUuk iztkfr & सितम्बर माह में गन्ना बुवाई व ट्रेच (वैज्ञानिक विधि) का उपयोग करके 5 फीट पंक्ति से पंक्ति की दूरी पर लगाया गया जिसमें गन्ना की Co-0238 प्रजाति के एक आँख वाले टुकडे बीज के रूप में प्रयोग किये गये।

2- fMªi ikuh cpku dh rduhd& गन्ना फसल में पानी की बचत तभी संभव है, जब फसल में ड्रिप इरिगेसन सिस्टम लगा हो, किसान माजिद अली खान के समस्त गन्ना फसल में ड्रिप सिस्टम लगाया है सिंचाई में 5 से 7 घंटे का समय लगता है और ड्रिप सिस्टम से 50 मिनट में 1 एकड़ की सिंचाई की जाती है। खेत में फसल के सुखे अवशेष को एक परत में बिछा देता हूँ, जिससे खेत में उचित नमी बनी रहती है और पानी कम लगता है, जिससे पानी, विद्युत ऊर्जा, समय, श्रम आदि की बचत होती है।

3- lgQly cokbZ fof/k& सहफसल की बुवाई पंक्तियो में की गयी, ताकि पंक्तियाँ एवं बीज की उचित दूरी बनी रहे एवं उचित से उचित प्रबंधन किया जा सके। यह फसल की अच्छी उपज के लिए खेत में पौधे की समुचित संख्या होनी चाहिए। जिससे बीज एवं समय, श्रम की बचत की गयी।

4- Qly dk vo'k"k o lek/kku& गन्ने व सब्जियों की पंक्तियों को ट्रेस मल्चिंग से गन्ने व सब्जियों की सूखी पत्तियों को एक गन्ने की पंक्ति से दूसरी पंक्ति के बीच खाली जगह पर 7 से 12 सेमी0 मोटी परत बिछा दी। इस प्रकार बिछाई की गन्ने का अंकुरन न ढ़कने पाए तथा केवल खाली स्थान ढ़क दिया जाए। ऐसा करने पर हमारी फसल में कोई खरपतवार नहीं हुई है। जिससे हमारी भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ी है और फसल की उपज में वृद्धि हुई है।

5- ¼Mh&dEikst j½ moZjd cpku dh rduhd& डी–कंपोजर के प्रयोग से 40 प्रतिशत तक रासायनिक उर्वरक की बचत की है, जिससे हमारी फसल को रासायनिक उर्वरक (जैसे यूरिया डी0ए0पी0, एम0ओ0पी0 आदि) फसलों के लिए आवश्यक नहीं है।

उपरोक्त तकनीकी सहायता से मैंने गन्नें की फसल से (रू 175500.00 – 66450.00 (109050.00) की खेती की तुलना में शुद्ध आय के रूप में रू 258330.00 प्राप्त किया।

उद्यान नर्सरी से अधिक आय की सफलतम कहानी

मैं सुशील सिंह पुत्र अमर सिंह निवासी ग्राम– काकथेर, विकास खण्ड–गजरौला, जनपद–अमरोहा का निवासी हूँ। मैं एक प्रगतिशील कृषक हूँ। पहले मैं अपनी खेती में गेहूँ, धान व गन्ने की फसल लेता था। जिससे मुझे कम आय अर्जित होती थी और काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता था। वर्ष 2018 में कृषि विज्ञान केन्द्र अमरोहा की स्थापना होने के बाद मैं वहां के वैज्ञानिकों से तकनीकी सलाह व प्रशिक्षण समय–समय पर लेता रहा है मैं अपने यहां पौधों की नर्सरी का कार्य 0.5 हे0 जमीन पर करके एक सम्मानजनक आजीविका कमा रहा हूँ। वह दूसरों के साथ प्रतिस्पर्धा करने और नर्सरी प्रबंधन का एक सभ्य आजीविका बनाने के लिए आश्वस्त हूँ। मेरी आय मामूली रूप से चार हजार से आठ हजार रूपये प्रति माह है जो हम खेती के माध्यम से कमाते हैं। मैंने अपनी नर्सरी को ए. एस. हाईटेक नर्सरी (अमरोहा) नर्सरी प्रबंधन गतिविधियों के नाम से जाना है। मैंने अपने 0.5 हे0 जमीन को बदलने की महत्वाकांक्षा को पुष्प वाटिका के रूप में जन्म दिया। मुझे कृषि विज्ञान केन्द्र, अमरोहा की सहायता ओर तकनीकी मार्गदर्शन प्राप्त करने में सहायता मिली। केवीके ने मुझें विभिन्न प्रकार के बीज दिये उन्हें मैंने अपनी नर्सरी में सफलतापूर्वक उगाया मुझे नर्सरी स्थापित करने में कुल लागत 2.5–3.0 लाख रूपये का खर्चा आया। जिसे मैंने बैंक से ऋण के रूप में लिया था, बैंक से इस शुरूआती उद्यम से सफलता हासिल की और इससे फल के बीजों को उगाने के लिए उनका आत्मविश्वास बढ़ा। यह उद्यम भी बहुत सफल हुआ।

नर्सरी के रख–रखाव में 25,000 से 30,000 रूपये तक प्रतिमाह खर्च होते हैं। अब तक मैंने 4.5 से 5 लाख रूपए का कारोबार किया है, जिसके जरिए मैंने एक साल के भीतर 3 लाख तक का लाभ हासिल किया है। उन्होंने अपनी पौध को विभिन्न प्राइवेट संस्थाओं को बेचा और इस समय अच्छी किस्म के फल और फूलों की नर्सरी तैयार कर ली है।

कुक्कुट पालन (ब्रायलर) : अतिरिक्त आय का साधन

मैं, शिवराज सिंह, पुत्र श्री देवी सिंह ग्राम एवं पोस्ट तितावी, विकास खण्ड बघरा जिला मुजफ्फरनगर का निवासी हूँ। मैंने चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय से बी0ए0 पास करने के बाद कृषि को अपनाया इसी बीच कृषि विज्ञान केन्द्र, बघरा से मैंने कुक्कुट पालन विषय पर एकदिवसीय प्रशिक्षण प्राप्त कर केन्द्र द्वारा 500 चूजे, कुक्कुट आहार एवं जीवनरक्षक औषधियाँ निःशुल्क प्राप्त कर ब्रायलर कुक्कुट इकाई की शुरूआत की। केन्द्र के निरन्तर सहयोग से वर्तमान में मेरे पास पांच–पांच हजार की दो कुक्कुट इकाई हैं। प्रतिवर्ष ब्रायलर (वैनकाब) के 3–4चक्र लेता हूँ मेरे पास दो श्रमिक वर्षभर रहते हैं कृषि के अतिरिक्त प्रतिवर्ष मुझे रूपये 4,00,000 कुक्कुट पालन से मिल जाते हैं। मेरे फार्म पर काम करने वाले व्यक्तियों में से अब तक पांच ने अपनी ब्रायलर कुक्कुट इकाई शुरु की हैं।

कृषि विविधीकरण से उत्पादन में लाभ

मैं अमरजीत सिंह, ग्राम व पो0–करमचा, जनपद–रामपुर का कृषक हूँ। मैं पारंपरिक तरीके से खेती का कार्य करता था। जिससे हमें अपेक्षित लाभ प्राप्त नही होता था। कृषि विज्ञान केन्द्र, रामपुर के सम्पर्क में आने के बाद कृषि विविधीकरण के अर्न्तगत खेती कर रहा हूँ जिसमें मेंथा, दलहनी फसलें के बीज उत्पादन के साथ साथ सब्जी एवं फूलों की खेती के कार्य में मुझे प्रतिवर्ष लगभग 4.5 से 5 लाख रूपये लाभ प्राप्त हो रही है।

खेती के साथ अतिरिक्त आय हेतु मशरुम उत्पादन

मैं सतवीर सिंह पुत्र श्री रोड़ा सिंह, ग्राम मदनुकी ब्लाक–रामपुर मनिहारन, पो0 पहासु, जिला सहारनपुर (उ0प्र0), मैं विगत 10 वर्षो से मशरुम उत्पादन कर रहा हूँ इससे पहले मैं गन्ने की खेती करता था जिसमें लागत ज्यादा और बचत कम होती थी। और लेबर की कमी होने के कारण गन्ने का कार्य करना कठिन हो रहा था। मैने 10 X 10 फीट के कमरे में मशरुम का उत्पादन शुरु किया। अब मैं वर्ष में 4 लाख 30 हजार तक का शुद्ध लाभ प्राप्त कर लेता हूँ। तथा मेरे सम्पर्क में आये किसानों को भी मशरूम की उत्पादन तकनीक शिखाकर कर उनका भी आर्थिक लाभ कर रहा हूँ।

मधुमक्खी पालक की सफलता की कहानी

मैं विजय कसाना, ग्राम–सिरोरा सलेमपुर, पोस्ट भूपखेड़ी, ब्लॉक–लोनी, जिला–गाजियाबाद का किसान हूँ मैने डीडी नेशनल के कृषि दर्शन कार्यक्रम में कृषि वैज्ञानिकों द्वारा दिए गए मधुमक्खी पालन के ज्ञान से प्रेरित होकर हमने वर्ष 2006 में मधुमक्खी पालन शुरू किया। शुरुआत में हमने 27 बी कॉलोनी से काम शुरू किया था जिसे हमने एक साल में बढ़ाकर 43 मधुमक्खी कॉलोनी कर दिया था, जिसके बाद हमने अपने कृषि विज्ञान केंद्र, गाजियाबाद से संपर्क करके तकनीकी जानकारी हासिल की और इसे पूर्णकालिक रोजगार बनाने का कार्य किया। वर्ष 2007 में, हमने खादी ग्रामोद्योग आयोग की ग्रामीण रोजगार सरजन कार्यक्रम में पांच लाख रुपये का ऋण लेकर अपनी कॉलोनियों की संख्या 200 तक बढ़ा दी। जिससे पहले साल में लगभग 9300 किलो शुद्ध शहद का उत्पादन किया, जिसके द्वारा 3,40,000/– रुपये की शुद्ध लाभ अर्जित किया गया। जहाँ हमने फसलों के मौसम में शहद की और बड़ी मात्रा का उत्पादन किया वहीं ऑफ सीजन सरकार द्वारा परागिकरण के लिए मिलने वाले अनुदान के लिए हिमांचल व उत्तराखण्ड में सेब के बागानों में मधुमक्खी कॉलोनियाँ स्थापित की। भारत वर्ष में मधुमक्खी पालन में उचित मानक के मधुमक्खी बॉक्स और अन्य उपकरणों की कमी को देखते हुए वर्ष 2013 में लकी बी–फार्म ने मधुमक्खी बॉक्स निर्माण व उपकरण निर्माण इकाई की स्थापना की, जिससे मधुमक्खी पालन को आसानी से उचित मानक के मधुमक्खी बॉक्स व उपकरण प्राप्त हो सकें। पिछले कई वर्षों में विभिन्न राज्यों में एक्सपोजर विजिट कर विभिन्न क्षेत्रों में होने वाले मधुमक्खी पालन की स्थिति और समस्याओं को जानने का प्रयास किया और उन्हें कृषि विज्ञान केन्द्र के माध्यम से तकनीकी जानकारी प्रदान करवायी। कृषि विज्ञान केन्द्र गाजियाबाद के विशेष सहयोग से हमने समय–समय पर आयोजित कृषि मेले व सैमिनारों में मधुमक्खी पालक विशेषज्ञ के रूप में भाग लिया और कृषि विज्ञान केन्द्र व खादी ग्रामोद्योग द्वारा आयोजित लगने वाले कृषि मेले सेमिनारों व प्रदर्शनियों अपने उत्पादनों और उपकरणों का प्रदर्शन करने का अवसर मिला। वर्ष 2017 में भारत सरकार द्वारा मधुमक्खी पालन को बढ़ावा देने के लिए और किसानों की आय को दुगुना करने के प्रधानमंत्री जी द्वारा हनी मिशन कार्यक्रम शुरू किया गया जिसमें खादी ग्रामोद्योग आयोग के माध्यम से हमारी फर्म लकी बी–फार्म द्वारा निविदा प्रक्रिया के माध्यम से राज्य सहित कई अन्य राज्यों में मधुमक्खी कॉलोनियों और अन्य उपकरणों की आपूर्ति की गयी। पिछले तीन वर्षों में हमने विभिन्न राज्यों में लगभग दस हजार मधुमक्खी कॉलोनियों को और उपकरणों को वितरित किया है। जिससे मैने वर्ष 2018–19 में 2500 बी कालोनीयाँ तैयार की, जिससे मुझे 75000 किलो शहद प्राप्त हुआ। इसका कुल मूल्य रुपये 67,50,000 प्राप्त हुआ। जिसके उत्पादन में रुपये 40,00,000 का व्यय हुआ और मुझे कुल 27,50,000 शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ है।

सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय मेरठ – 250110

संरक्षक : डा० आर० के० मित्तल, कुलपति
सम्पर्क सूत्र : डा० एस० के० सचान, निदेशक प्रसार
मुख्य संकलनकर्ता : डा० सतेन्द्र कुमार, प्राध्यापक उद्यान
संकलनकर्ता : डा० एस. के. लोधी, डा० पी० के० सिंह